

## आकारिमकता मूलक प्रमाण

इस प्रमाण में विश्व की वस्तुओं के आकारिमक अस्तित्व के आधार के रूप में अनिवार्य एवं स्वतंत्र सत्ता

"ईश्वर की सत्ता को अनुमानित किया जाता है" यहाँ आकारिमकता का अर्थ है जिसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हो जो अपनी सत्ता के लिये दूसरे पर निर्भर हो, विनाशी हो नहीं

यहाँ इस प्रमाण के दो रूप दिखाई देते हैं

(i) विश्व की प्रत्येक वस्तु आकारिमक है अर्थात् प्रत्येक वस्तु किसी अन्य पर आश्रित है वह अन्य वस्तु भी अपने अस्तित्व के लिये किसी-दूसरे पर आश्रित है इस प्रकार इस क्रम में आगे बढ़ने पर मनुष्यादिक की उत्पत्ति हो जाती है इससे बचने के लिये आकारिमक वस्तुओं के आधार के रूप में अनिवार्य एवं स्वतंत्र सत्ता, अर्थात् ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार लिया जाता है

(ii) यदि विश्व की प्रत्येक वस्तु आकारिमक है तो फिर एक-एक करके सभी वस्तुओं का विनाश होकर शून्य की स्थिति पैदा हो जानी चाहिए थी तथा वर्तमान में भी कुछ नहीं रहना चाहिए था क्योंकि एक बार शून्य

की स्थिति उत्पन्न होने के बाद फिर उस शून्य से किसी वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती परंतु वर्तमान में वस्तुएँ विद्यमान हैं। यह सिद्ध करता है कि वस्तुओं की उत्पन्न एवं कायम रखने के लिये अवश्य ही कोई एक ऐसी सत्ता है। जिसका अस्तित्व अनिवार्य स्वतंत्र एवं त्वनिर्भर है - यही सत्ता ईश्वर है।

बुद्धिवादी दार्शनिक लाइबेनीज के अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु माकडिमिक है। आकस्मिक वस्तुओं के पर्याप्त हेतु का होना आवश्यक है। विश्व की आकस्मिक वस्तुओं का पर्याप्त हेतु ईश्वर है। इस रूप में ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है।

भारतीय संपर्न - भारतीय दर्शन में न्याय दर्शन में भी उदयन ने अपने 'न्याय पुष्पांमंजरी' में ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि के क्रम में 'धृत्यादे' पद के द्वारा इस तर्क का समर्थन किया है। यहां धृत्यादे का आशय है धृते + अर्पे है। धृते का आशय है - धारणकर्ता। न्यायमतानुसार यदि कोई शाश्वत चेतन तत्व इस जगत् का धारणकर्ता नहीं होता तो फिर यह जगत् अवलोक्य विनष्ट हो गया रहता। यह शाश्वत चेतन ईश्वर ही इस जगत् का धारण करती है। यहां आदिशब्दका वात का द्योतक है कि ईश्वर ही इस जगत् का विनाश कर देने वाला भी है। इस प्रकार ईश्वर जगत् का निर्माणकर्ता होने के साथ-2 धारणकर्ता एवं संरक्षक भी है।



शालीचना

भाषा विश्लेषणवादियों के अनुसार ईश्वर की अनिवार्यता के रूप में सिद्ध करने का प्रयास असंगत है। अनिवार्यता की अवधारणा विश्लेषणात्मक प्रतिक्रियाओं पर लागू होगी। इसे ईश्वर पर लागू नहीं किया जा सकता अन्यथा उसकी वास्तविकता खंडित होगी।

विश्व की वस्तुओं को आकस्मिक देखकर यह निष्कर्ष निकालना की विश्व, अपने सम्पूर्णता में आकस्मिक है तर्क संगत नहीं है। इसमें संहारी दोष है।

जो बात अंश पर लागू होती है यदि उसे पूर्ण पर लागू किया जाये तो वहां संहारी दोष उत्पन्न होता है।  
(Fallacy of Composition)  
(Fallacy of Composition)

अतः विश्व की वस्तुएं आकस्मिक एवं नश्वर हैं। तो फिर इसका कारण भी इसके अनुरूप होना चाहिए इनसे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि आकस्मिक वस्तुओं के आधार के रूप में विपरीत प्रकृति वाले अनिवार्य अस्तित्व की स्थापना की बात तार्किक रूप से संभव नहीं है।